गोविन्द गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय, बाँसवाड़ा
वेद विद्यापीठ

E Mail- vedvidhyapeethggtu@gmail.com

कर्मकाण्ड एवं पौरोहित्य – एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम

प्रथम प्रश्न पत्र :– देवपूजा प्रयोग अंक–100

कर्मकाण्ड का उद्भव एवं विकास।

- शिखा बन्धन उसके उद्देश्य एवं महत्त्व।
- यज्ञोपवित के उद्देश्य एवं महत्त्व।
- तिलक धारण के उद्देश्य एवं महत्त्व।
- पवित्री धारण के उद्देश्य एवं महत्त्व।
- आचमन एवं प्राणायाम की संक्षिप्त जानकारी।
- संकल्प के उद्देश्य एवं महत्त्व।
- देवपूजा के प्रकार– पंचोपचार, त्रिंशोपचार, षोड़शोपचार।
- आरती के महत्त्व एवं विधि।
- पंचगव्य के औषधीय महत्त्व।
- यज्ञ में प्रयुक्त विविध अग्नि।
- यज्ञ काष्ठ एवं समिधा के प्रकार।
- यज्ञ में प्रयुक्त उपकरण का संक्षिप्त परिचय।
- विभिन्न मण्डल एवं देवताओं का परिचय एवं यज्ञ मण्डप में विभिन्न मण्ड़लों की दिशा।
- आघार होम,श्रिष्टकृत होम, नवाहुति, बलिदान, पूर्णाहुति होम, वसोर्धारा आदि का सामान्य परिचय।
- देवपूजा में प्रयुक्त विभिन्न वेद मन्त्र का सूक्तानुसार उल्लेख।
- यज्ञ में होता, अध्वर्यु, पाठक, आचार्य ब्रह्मा, गाण्पत्य आदि का परिचय।
- नित्यकर्म संन्ध्या इष्टस्मरण, गुरूवंदना, कर्मांगवरूण पूजा, भूमि पूजन, दीपपूजन।
- आचमन तिलक व (यजमान, यजपत्नी) ग्रन्थि बन्धन मंत्र, यज्ञोपवितधारण प्रयोग और नमस्कार।
- दिक्रक्षण(मन्त्रात्मक एवं पौराणिक), शंखपूजा, गरूडघण्टी पूजन, भद्र सूक्त पाठ, गणपति ध्यान,
- गणपति द्वाद्वश नाम स्मरण, कर्म संकल्प, गणपत्यादि पंचदेव पूजन, विशेषार्घदान, गौर्यादि षोडश मातृका पूजन।
- श्रयादिसप्तवसोधारा पूजन, आभ्युदयिक नान्दी श्राद्ध प्रयोग, आचार्य ब्रह्मऋत्विज
- वरूण कलश स्थापना, पंच पल्लव सप्त मातृका, पंचरत्न, सर्वौषधि आदि का नाम परिचय।

❖ पुण्याहवाचन, हवनवेदी, निर्माण प्रकार, कुशकुण्डिका, पंचभूसंस्कार, सूर्यादिनवग्रहपूजन, शिवादि अधिदेव तथा अग्न्यादि प्रत्यधि देवपूजन व ब्रह्मादि पंचदेव पूजन।

❖ हेमादि श्रवण प्रयोग— दशविधि स्नान सहित।

द्वितीय प्रश्न पत्र :— शिखाआदि चतुःषष्टि पद वास्तुमण्ड़ल देवता स्थापन।

❖ दिव्य योगिन्यादि चतुःषष्टि योगिनी मण्डल पूजन, अजरादिक्षेत्रपाल पूजन, ब्रह्मादि सर्वतो भद्र मण्ड़ल देवता।

❖ लिंगतो भद्र मण्डल देवता पूजन प्रतिमा वस्त्रवेष्टन।

❖ प्रधान प्रतिमाधृतआलेपन, अग्न्युत्तारण विधि, प्रधान ।

❖ प्रतिमाप्राणप्रतिष्ठा प्रधान पूजा आव्हानआदि षोडशौ उपचार पूजा, हवनारम्भ, प्रजापति आदि देवों के निमित्त आहुति, अग्नि पूजन, वारूणी पंचाहुति, आवाहित देवोंका नाम मंत्र अथवा

❖ वैदिक मंत्र हवन, श्रीसूक्तहवन स्विष्टकृतहोम, इन्द्रादिदशदिक्पाल पूजन तथा बलिदान, क्षेत्रपाल पूजन एवं बलिदान होमान्त, उत्तरपूजन, सुव में उन्चास मरूद्गणपूजा, पूर्णाहूति निमित्त मृडनामाग्निपूजन, पूर्णाहूति वसोद्धाराहोम, भस्मधारण,अगन्योपस्थापन, यजमान अभिषेक, कामनापूर्तिसंकल्प, संसवप्राशन ब्रह्म ग्रन्थि विसर्जन, प्रणीतापात्र क जल से यजमान अभिषेक, पवित्री का अग्नि में प्रक्षेपण प्रणीतान्युजीकरण, ब्रह्मा के लिए पूर्णपात्रदा बर्हिहोम, दक्षिणादान संकल्प, न्यूनातिरिक्तदोष परिहारार्थ, गौघास, कपोतादिकों के लिए धान्यदान संकल्प, दीन अनाथादिको के लिए दक्षिणा संकल्प आचार्यादिव्रती ब्राह्मणों के लिए दक्षिणा दान संकल्प, ब्राह्मण बटूक, कुमारी आदि के भोजन निमित्त भोजन संकल्प वैदिक आदि मंत्र धान देवताओं की प्रचलित आरती मंत्र पुष्पांजलि, आशीर्वादग्रहण, देवविसर्जन एवं पुरः मांगलिक कार्यो में आगमन की प्रार्थना।

तृतीय प्रश्न पत्र :— विविध मुहूर्त ज्ञान —
कर्मकाण्ड में प्रयुक्त विभिन्न मुद्रा ज्ञान एवम उसका वैज्ञानिक महत्व।

❖ अवंकहडाचक्र ज्ञान, पंचाग परिचय, जन्माक्षर निर्माण विधि, इष्टकाल, सूर्यराशि अंश, लग्नराशि अंश, जन्मकुण्डली में ग्रहस्थापन प्रकार, चन्द्र कुण्डली, जन्माक्षर के अनुसार राशि, राशिपति, नक्षत्र चरणानुसार नाम निर्धारण गण—नाडी—योनि एवं सूर्यराशि एवं नक्षत्रानुसार पाया, ज्ञान, चौघडिया मुहूर्त, राहूकालज्ञान, गोधूलिएवं अभिजित लग्न के मान का ज्ञान, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, उपनयन, विवाहमुहूर्त, सूर्य, गुरू एवं चन्द्र शुद्धि ज्ञान, देव प्रतिष्ठा, व्यापार प्रारंभ, वाहन क्रय, प्रसूतिस्नान, जलवा, चूड़ा पहनने का मुहूर्त, वाद प्रस्तुत करने के वार एवं नक्षत्र का ज्ञान, चौल संस्कार (जडूला) विद्यारम्भ आदि समाजोपयोगी विभिन्न संस्कारों के मुहूर्त।

❖ **जन्माक्षर निर्माण ज्ञान**

❖ पंचांग साधन तिथि तथा नक्षत्रों की संख्याएं, अक्षांश तथा रेखांश से सूर्यादय साधन। गुणमेलापक विधिज्ञान, कुण्डली मेलापक, शुभाशुभ ज्ञान, मांगलिक विचार, अनुष्ठान आरंभ, अेवारंभ, क्रय, विक्रय, ऋण लेने एवं देने का मुहूर्त, विभिन्न दिशाओं में प्रस्थान हेतु, यात्रा दिवस एवं वार का ज्ञान, सम्मुखादि चन्द्रवास, कुपारम्भ मुहूर्त, पंचक ज्ञान, सिद्धि योग

कुयोगादि परिचय, अग्निवास, भद्रावास, शिववास ज्ञान। इष्ट साधन, ग्रह स्पष्ट, लग्न स्पष्ट, राशि ज्ञान।

चतुर्थ प्रश्न पत्र :– (व्रत उद्यापन विधि मन्त्र एवं स्तोत्र पाठ) – 100 अंक।

❖ व्रतोद्यापन विधि–
रामनवमी, जन्माष्टमी, विभिन्न एकादशी, प्रदोष, अनन्त चतुर्दशी, ऋषिपंचमी, सत्यनारायण व्रत कथा, पूर्णिमा, गंगोदक,पूजन, तुलसी विवाह एवं विभिन्न व्रत उद्यापन विधि।

❖ रूद्राष्टाध्यायी –**सम्पूर्ण**

❖ **स्तोत्र पाठ**

❖ शिव, विष्णु, गणेश, लक्ष्मी, दुर्गा, सरस्वति, श्रीराम, श्रीकृष्ण, तथा श्रीसूक्त, विष्णुसहस्त्रनाम, गणेशाथर्वशीर्ष, सहस्त्रघट विधि, नवरात्र अनुष्ठान विधि, दुर्गासप्तशती का पाठ विधि एवं रूद्राभिषेक एवं स्तोत्रों के यतिगतिलयबद्ध पाठ का अभ्यास व पारिभाषिक ज्ञान।

पंचम प्रश्न पत्र :– प्रायोगिक मौखिकी **अंक –40**

प्रथम प्रश्न पत्र का "क" भाग पर आधारित पूजा पद्धतियों का प्रयोग, मण्डलादि तथा वेदी निर्माण करना, जन्म कुण्डली निर्माण एवं संक्षिप्त फलादेश। मुहूर्त व्यापार आरम्भ, गृह प्रवेश, शिलान्यास, चौलकर्म, आदि का मुहूर्त निर्धारण करना।
यज्ञ हवनविधि, पुष्पांजलि मंत्रों का लयबद्ध वाचन करना, बलिविधान का प्रयोग का ज्ञान। अक्षांश –रेखांश का ज्ञान एवं लग्न स्पष्ट। जन्म समयानुसार जन्माक्षर बनाना तथा प्रतिष्ठित स्थानीय पुरोहितों के निर्देशन में सम्बन्धित विषय का प्रायोगिक अभ्यास एव उसका परीक्षण।
रूद्रसूक्त, पुरूषसूक्त, नमक चमक का शुद्धोच्चारण करना।
गणपति अथर्वशीर्ष, दुर्गासप्तशती की शक्रादय स्तुति और नारायणी स्तुति का यति गतिलयबद्ध शुद्धोच्चारण करना।

सहायक ग्रन्थ :–

❖ ग्रह शान्ति।
❖ पंचांग ज्ञान।
❖ विविध मुहूर्त।
❖ ब्रह्म नित्यकर्म समुच्चय एवमं ब्रह्म नित्यकर्म प्रयोग।
❖ नित्यकर्म पूजाप्रकाश गायत्री पुरश्चरण प्रयोग।
❖ शीघ्र बोध।
❖ व्रतोद्यापन चन्द्रिका।
❖ रूद्राष्टाध्यायी।
❖ स्तोत्र रत्नावली।